website : www.chintanresearchjournal.com

ISSN : 2348-0114
Impact Factor 2.632

International Refereed

हिन्दू

अतरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(UGC Approved Journals List)

वर्ष : 4 अंक : 15
श्रावण विक्रमी सम्वत् : 2074
मई - जुलाई 2017

सम्पादक
आचार्य (डॉ०) शीलक राम

आचार्य अकादमी, भारत
(ISO : 9001 : 2008)

(International Refereed)
Impact Factor 2.632
हिन्दू अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध-पत्रिका
वर्ष:4, अंक:15 (मई-जुलाई, 2017) (पृ.सं. 202-204) (ISSN 2348 – 0114)

हड़प्पा सभ्यता में वस्त्र उद्योग

डॉ. मोहन लाल
असिसटेंट प्रोफेसर, इतिहास-विभाग
आई.जी.एन. कॉलेज, लाडवा
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

सिन्धु सभ्यता विश्व की एक नगरीय सभ्यता थी। इस सभ्यता में विभिन्न उद्योगों के साथ-2 वस्त्र उद्योग एक शिल्प के रूप में लोगों का प्रमुख व्यवसाय था, जिसमें बडी संख्या में लोग लगे हुए थे। विभिन्न पुरास्थलों की खुदाई से प्राप्त सामग्री यह दर्शाती है कि यहाँ वस्त्र उद्योग से जुड़े व्यवसाय जैसे कताई बुनाई, रंगाई, कसीदाकारी व सिलाई आदि में सिन्धुवासी पूर्णतः पारंगत थे। कपास का उत्पादन इस सभ्यता के लोगों द्वारा बड़े स्तर पर किया जाता था। कपास तथा इससे बने सूती वस्त्रों का विदेशों को निर्यात भी होता था।

मुख्य-शब्द : हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, उत्खनन, पुरास्थल ।

भारत में अति प्राचीन काल से ही वस्त्र-निर्माण का कार्य उन प्रमुख शिल्पों में से एक था, जो कृषि के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार बना। इस शिल्प में ही कृषि क्षेत्र के बाद सबसे अधिक संख्या में लोग लगे हुए थे। सिन्धु सभ्यता के काल में वस्त्र-निर्माण का प्रारम्भ एक कुटीर उद्योग के रूप में हुआ। धीरे-धीरे राज्य की सकारात्मक नीतियों एवं इसमें लगे कारीगरों की तकनीकी कार्यकुशलता में विकास के परिणामस्वरूप भारतीय वस्त्र उत्पाद न केवल भारत में बल्कि विभिन्न पश्चिमी देशों में भी प्रसिद्ध हो गये और भारतीय वस्त्र उद्योग ने एक विकसित उद्योग के रूप में अपना स्थान बना लिया। प्रस्तुत शोध पत्र में सिन्धु सभ्यता के विभिन्न पुरास्थलों की खुदाई में मिली सामग्री के आधार पर इस काल में वस्त्र उद्योग तथा इससे जुड़े अन्य कार्यों की स्थिति को उजागर किया गया है।

सिन्धु सभ्यता में वस्त्र उद्योग विशेष रूप से सूती वस्त्र उद्योग ने पर्याप्त उन्नति की थी। मेहरगढ में प्राकसैन्धव संस्कृति के स्तर से कपास के साक्ष्य मिलने से पूर्व सिन्धु सभ्यता के लोगों को सम्पूर्ण विश्व में सबसे पहले कपास का उत्पादन करने का गौरव प्राप्त था। सिन्धु सभ्यता के विभिन्न स्थलों से प्राप्त मूर्तियों की वेशभूषा एवं तकलियाँ, सूत कातने एवं कपड़ा बुनने की कला के विकास का संकेत देती है।[1] मोहनजोदड़ो के उत्खनन में प्राप्त बुने हुए सूती वस्त्र के रेशों से भी सिन्धुवासियों द्वारा वस्त्र निर्माण में कपास के प्रयोग की पुष्टि होती है।[2] कुछ विद्वानों के अनुसार हड़प्पा के लोगों द्वारा सुमेर को कपास और सूती वस्त्रों का निर्यात भी किया जाता था। बेबिलोनिया और यूनानी भाषाओं में कपास हेतु 'सिन्धु' तथा 'सिडोन' शब्दों का प्रयोग भी सिन्धु प्रदेश में कपास के उत्पादन को सिद्ध करते है।[3] इस सभ्यता के किसी भी पुरास्थल से रेशम अथवा रेशमी वस्त्र के साक्ष्य प्राप्त नही हुए सम्भवतः रेशम का प्रचलन इस काल में नही था। परन्तु हड़प्पा सभ्यता के बाद नेवासा नामक ताम्रपाषाणिक पुरास्थल के उत्खनन से एक हार में प्रयुक्त रेशम की डोरी का प्रमाण रेशम के अस्तित्व को प्रमाणित करता है।[4] ऊन के प्रत्यक्ष साक्ष्य इस सभ्यता के किसी भी पुरास्थल से नहीं मिले परन्तु

उत्खनन से बकरियों की अपेक्षा भेड़ों की हड्डियों का अधिक संख्या में पाया जाना तथा मृदभाण्ड़ों पर उनके चित्र इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि सम्भवत: ऊन व ऊनी वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था।[5] यहां यह बात भी विचारणीय है कि हड़प्पावासी पंजाब की कठोर सर्दी से बचने के लिए ऊनी वस्त्रों का प्रयोग नही करते होंगे जबकि उनके द्वारा भेड़ को लम्बे समय से पालतु बनाया जा चुका था।[6]

सिन्धु सभ्यता के पुरास्थलों से प्राप्त असंख्य तकलियों की प्राप्ति से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता के लोगों द्वारा कताई और बुनाई का कार्य सामान्य रूप से किया जाता था। उत्खनन में प्राप्त तकुएं मिट्टी के साथ-2 सेलखड़ी और शंख आदि से बने है।[7] धूरे में प्रयुक्त चक्र (whorls) एक, दो और तीन छिद्र वाले पाए गए हैं, जोकि मिट्टी पत्थर और शंख आदि से बने हैं, जिसका कार्य कताई के समय धुरे की गति अथवा संवेग को एक समान बनाये रखना होता था।[8] लोथल से वस्त्र निर्माण में प्रयुक्त दो प्रकार के मिट्टी के तकुएं प्राप्त हुए हैं - (अ)अन्दर की ओर धंसा हुआ (अवतल) वृताकार एवं संकरे सिरे वाला (ब) बाहर की ओर उभरा हुआ (उत्तल) वृताकार बीच में छिद्रवाला ।[9] तकुएं के अलावा वस्त्र निर्माण में कारीगरों द्वारा धागा लपेटने हेतु फिरकी (Bobbin) और Loom Weights का प्रयोग किया जाता था। जोकि पकी मिट्टी और लकड़ी से बने होते थे। समय बितने के साथ लकड़ी नष्ट हो गई। परन्तु पकी मिट्टी से बने औजार अभी भी प्राप्त होते हैं।[10]

सिन्धु सभ्यता के लोग वस्त्रों पर कसीदाकारी का कार्य भी करते थे। खुदाई में मिली अनेक मूर्तियों पर प्रदर्शित कुछ वस्त्रों से ऐसा प्रतीत होता है कि उनके उपर सूई और धागों द्वारा डिजाइन बनाये गए हैं।[11] मोहनजोदड़ों से प्राप्त 'तिफूलिया' अलंकरण वाली योगी की मूर्ति सिन्धुवासियों की कसीदाकारी कला को प्रमाणित करती है।[12] खुदाई से प्राप्त असंख्य तकुएं और तांबे की सुईयों की प्राप्ति से भी यह सिद्ध होता है कि सिन्धुवासी कताई बुनाई के साथ कसीदाकारी कार्य में पारंगत थे। यह कार्य अधिकतर महिलाओं द्वारा किया जाता होगा, क्योंकि उनके पास इस कार्य हेतु पर्याप्त समय और रूचि दोनों थे। वस्त्रों की सुन्दरता को बढ़ाने हेतु उन पर रंगों का प्रयोग भी किया जाता था। मोहनजोदड़ों से मजीठ से रंगे हुए सूत के अंश प्राप्त हुए।[13] लोथल, राखीगढी तथा मोहनजोदड़ों से वस्त्रों को रंगने के लिए बनाये गए हौज तथा चबुतरों के साक्ष्य मिले हैं।[14] हड़प्पा से प्राप्त चाँदी के बर्तन में लिपटा हुआ लाल रंग के वस्त्र का टुकड़ा तथा कुम्भकारों द्वारा बर्तनों पर सफेद, काले और लाल रंगों का प्रयोग सिद्ध करता हैं कि सिन्धुवादी वस्त्र रंगाई से परिचित थे।[15] मोहनजोदड़ों, हड़प्पा से प्राप्त कांसे व तांबे की सुईयाँ के साक्ष्य यह सिद्ध करते हैं कि सिन्धुवादी वस्त्रों की सिलाई से भी परिचित थे।[16]

वस्त्र उद्योग व अन्य अनेक विकसित उद्योगों को देखते हुए इस काल में श्रेणी संगठनों के विद्यमान होने की सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता। विभिन्न पुरास्थलों के उत्खनन से वस्त्र उद्योग से सम्बन्धित अनेक प्रक्रियाओं जैसे कताई-बुनाई, रंगाई, कसीदाकारी और सिलाई के अप्रत्यक्ष साक्ष्यों तथा वस्त्र निर्माण में प्रयुक्त विकसित तकनीक से बने विभिन्न उपकरणों से भी स्पष्ट है कि ये उन पेशेवर शिल्पियों की कृतियां हैं, जिनका सम्भवत: अपना संगठन रहा होगा।[17] उत्खनन से हड़प्पा सभ्यता की आवासीय योजना में पेशेवर शिल्पियों के लिए निश्चित आवास योजना के साक्ष्य ये इंगित करते हैं कि ये उन संगठित कारीगरों के आवास स्थल रहे होंगे जिसमें कपड़ा बुनने व रंगने वालों के अलावा अन्य व्यवसायों के शिल्पी भी शामिल थे।[18] परन्तु लिखित साक्ष्यों के अभाव में इन संगठनों के स्वरूप व कार्यों के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

इस प्रकार विभिन्न पुरास्थलों के उत्खनन में वस्त्र-निर्माण से जुड़ी सामग्री यद्यपि बहुत ही अल्प है, परन्तु इसका गहन अध्ययन यह सिद्ध करता है कि सिन्धु सभ्यता में वस्त्र निर्माण तथा इससे जुड़े अन्य व्यवसाय उन्नत अवस्था में थे।

संदर्भ

1. जॉन मार्शल, *मोहनजोदड़ों एण्ड दि इण्डस सिविलाईजेशन,* पृ. 585
2. *जर्नल ऑफ दि बिहार रिसर्च सोसायटी,* वॉल्यूम-59, 1973, पृ. 115-116
3. *जर्नल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री,* वॉल्यूम-50, 1973 पृ. 74
4. कुमुध, *हैण्डीक्राफ्टस् इन दि इण्डस वैली सिविलाईजेशन,* पृ. 90
5. इरफान हबीब, *दि इण्डस सिविलाईजेशन,* पृ. 27-28
6. इरफान हबीब, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 27
7. कुमुध, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 92
8. अरेन्दु शेखर राय, *क्राफ्टस एण्ड टैक्नोलॉजी इन ऐन्शियंट इण्डिया,* पृ. 38
9. कुमुध, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 93-94
10. अरेन्दु शेखर राय, पूर्वोद्धृत, पृ. 38
11. कुमुध, पूर्वोद्धृत, पृ. 95-96
12. इरफान हबीब, पूर्वोद्धृत, पृ. 34
13. ***उपरिवत्,*** पृ. 27
14. एस.आर.राव, लोथल, पृ. 78; अमरेन्द्र नाथ, फर्दर एक्सक्वेशन एट राखीगढ़ी, पुरातत्त्व, 1998-99, पृ. 47
15. कुमुध, पूर्वोद्धृत, पृ. 94
16. उपरिवत्
17. किरण कुमार थपल्याल तथा एस.पी. शुक्ल, सिन्धु सभ्यता, पृ. 168
18. उपरिवत्, पृ. 51-53